नमूना प्रश्न पत्र (हिन्दी पाठ्यक्रम अ के लिए)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश –

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका अनुपालन कीजिए –

(1) प्रश्न-पत्र के दो खंड है - खंड 'अ' और खंड 'ब'।

(2) 'अ' में कुल 10 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए है। सभी प्रश्नों के उपप्रश्न दिए गए है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(3) 'ब' में कुल 7 वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए है। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड 'अ' (वस्तुपरक प्रश्न)

1. **नीचे दो गद्यांश दिए गये है। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।** (5 × 1 = 5)

जल और मानव-जीवन का सम्बन्ध अत्यन्तघनिष्ठ है। वास्तव में जल ही जीवन है। विश्व की प्रमुख संस्कृतियों का जन्म बड़ी बड़ी नदियों के किनारे ही हुआ है। बचपन से ही हम जल की उपयोगिता, शीतलता और निर्मलता के कारण उसकी और आकर्षित होते रहे हैं। किन्तु नल के नीचे नहाने और जलाशय में डुबकी लगाने में जमीन-आसमान का अन्तर हैं। हम जलाशयों को देखते ही मचल उठते हैं, उसमें तैरने के लिए। आज सर्वत्र सहस्त्रों व्यक्ति प्रतिदिन सागरों, नदियों और झीलो में तैरकर मनोविनोद करते हैं और साथ भी स्वस्थ रखते हैं। स्वच्छ शीतल जल में तैरना तन को स्फूर्ति ही नहीं मन को शांति भी प्रदान करता है।

तैराकी आनंद की वस्तु होने के साथ-साथ हमारी आवश्यकता भी है। नदियों के आसपास गाँव के लोग सड़क-मार्ग न होने परएक-दूसरे से तभी मिल सकते हैं जब उन्हें तैरना आता हो अथवा नदियों में नावें हों। प्राचीन काल में नावें कहाँ थी ? तब तो आदमी को तैरकर ही नदियों को पार करना पड़ता था। किन्तु तैरने के लिए आदिम मनुष्य को निश्चय ही प्रयत्न और परिश्रम करना पड़ा होगा, क्योंकि उसमें अन्य प्राणियों की भाँति तैरने के लिए आदिम मनुष्य को निश्चय ही प्रयत्न और परिश्रम करना पड़ा होगा, क्योंकि उसमें अन्य प्राणियों की भाँति तैरने की जन्मजात क्षमता नहीं है। जल में मछली आदि जलजीवों को स्वच्छंद विचरण करते देख मनुष्य ने उसी प्रकार तैरना सीखने का प्रयत्न किया और धीरे धीरे उसने इस कार्य में इतनी निपुणता प्राप्त कर ली कि आज तैराकी एक कला के रूप में गिनी जाने लगी। विश्व में जो भी खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती है, उनमें तैराकी की एक कला के रूप में गिनी जाने लगी। विश्व में जो भीखेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, उनमें तैराकी प्रतियोगिता अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती है।

1. तैराकी के द्वारा लाभ प्राप्त होते हैं –

(अ) मनोविनोद, शारीरिक स्फूर्ति व मानसिक शांति (ब) शारीरिक स्फूर्ति, सम्मान व मानसिक शांति

(स) मनोविनोद, सम्मान व मानसिक शांति (द) मनोविनोद, शारीरिक स्फूर्ति व सम्मान

2. प्राचीन काल में तैराकी मानव के लिए आवश्यक थी, क्यों ?

(अ) मछलियों को पकड़ने के लिए (ब) एक-दूसरे तक पहुँचने के लिए

(स) प्रतियोगिताएँ जीतने के लिए (द) मनोरंजन का एकमात्र साधन होने के कारण

3. आदिमानव को तैराकी की प्रेरणा मिली होगी –

(अ) जलचरों द्वारा (ब) पूर्वजों द्वारा (स) नभचरों द्वारा (द) निशाचरों द्वारा

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(अ) अनायास प्राप्त हुई क्षमता (ब) भाग्य से प्राप्त क्षमता

(स) जन्मजात क्षमता (द) निरन्तर अभ्यास से प्राप्त क्षमता

5. तैराकी की विश्व में महत्ता प्रकट होती हैं –

(अ) तैराकों को प्राप्त विशिष्ट सम्मान द्वारा (ब) शिक्षा-क्षेत्र में प्राप्त छूट द्वारा

(स) विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त होने से (द) तैराको को प्राप्त आर्थिक सहायता द्वारा

अथवा

यह घटना सन् 1899 की है। उन दिनों कोलकाता में प्लेग हुआ था। शायद ही कोई ऐसा घर बचा था जहाँ यह बीमारी न पहुँची हो। ऐसी विकट स्थिति में भी स्वामी विवेकानन्द और उनके कई शिष्य रोगियों की सेवा-सुश्रूषा में जुटे हुए थे। वे अपने हाथों से नगर की गलियाँ और बाजार साफ करते थे और जिस घर में प्लेग का कोई मरीज होता था, उन्हें दवा आदि देकर उनका उपचार करते थे। उसी दौरान कुछ लोग स्वामी विवेकानन्द के पास आए। उनका मुखिया बोला, 'स्वामी जी, इस धरती पर पाप बहुत बढ़ गया है, इसलिए प्लेग की महामारी के रूप में भगवान लोगों को दंड दे रहे हैं। पर आप ऐसे लोगों को बचाने का यत्न कर रहे हैं। ऐसा करके आप भगवान के कार्यो में बाधा डाल रहे हैं।' मंडली के मुखिया की कील जैसी बातें सुनकर स्वामी जी गंभीरता से बोले, 'सबसे पहले तो मैं आप सब विद्वानों को नमस्कार करता हूँ।' इसके बाद स्वामी जी बोले, 'आप सब यह तो जानते ही होंगे कि मनुष्य इस जीवन में अपने कर्मो के कारण कष्ट और सुख पाता है। ऐसे जो व्यक्ति कष्ट से पीड़ित है और तड़प रहा है, यदि दूसरा व्यक्ति उसके घावों पर मरहम लगा देते है तो वह स्वयं ही पुण्य का अधिकारी बन जाता हैं। अब यदि आपके अुनसार प्लेग से पीड़ित लोग पाप के भागी हैं तो हमारे कार्यकर्ता इन लोगों की मदद कर रहे हैं तो हमारे जो कार्यकर्ता इन लोगों की मदद कर रहे हैं, वे तो पुण्य के भागी बन रहे हैं। बताइए कि इस सन्दर्भ में आपको क्या कहना है?' उनकी बात सुनकर सभी लोग भौचक्के रह गए और चुपचार सिर झुकाकर वहाँ से चले गए।

1. कोलकाता में कौन-सी महामारी फैली थीं ?

(अ) चेचक (ब) प्लेग (स) हैजा (द) स्वाइन फ्लू

2. महामारी के विषय में कुछ लोगों की धारणा थी कि –

(अ) यह ईश्वर का कहर हैं। (ब) इस पर नियंत्रण असंभव हैं।

(स) दवाओं द्वारा इसकी रोकथाम संभव हैं। (द) लोगों को उनके पाप का दंड मिल रहा हैं।

3. कुछ लोगों की दृष्टि में विवेकानन्द जी द्वारा पीड़ितो की सेवा करना था –

(अ) लोक-कल्याण में बाधा (ब) लोक-कल्याण में सहायता

(स) ईश्वर के कार्य में बाधा (द) ईश्वर के कार्य में सहायता

4. स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार उनके तथा कार्यकर्ताओं द्वारा किया जा रहा कार्य था –

(अ) मानवोचित कर्म (ब) पाप कर्म (स) समाज-सेवा (द) पुण्य का कार्य

5. उपरोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है –

(अ) दंड (ब) महामारी (स) कर्मों का फल (द) पाप और पुण्य

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

.2 **नीचे दो पद्यांश दिए गए हैं। किसी एक पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–** (5 × 1 = 5)

यदि आप इस पद्यांश का चयन करते है तो कृपया उत्तर–पुस्तिका में लिखें कि आप प्रश्न संख्या 2 में दिए पद्यांश–I पर आधारित प्रश्नों में उत्तर लिख रहे है।

क्या कुटिल व्यंग्य दीनता वेदना से अधीर,
आशा से जिनका नाम रात–दिन जपती है,
दिल्ली के वे देवता रोज़ कहते जाते
कुछ और धरो धीरज किस्मत अब छपती है।
किस्मतें रोज़ छप रही मगर जलधार कहाँ ?
प्यासी हरियाली सूख रही है खेतों में,
निर्धन का धन पी रहे लोभ के प्रेत छिपे,
पानी विलीन होता जाता है रेतों में।
हिल रहा देश कुत्सा के जिन आघातों से,
वे नाद तुम्हें ही नहीं सुनाई पड़ते है?
निर्माण के प्रहरियों ! तुम्हें ही चोरो के
काले चेहरे क्या नहीं दिखाई पड़ते है?
तो होश करो, दिल्ली के देवों, होश करो।
सब दिन तो यह मोहिनी न चलने वाली है,
हो जाती है गर्म दिशाओं की साँसे,
मिट्टी फिर कोई आग उगलने वाली है।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए–

1. गरीबों के प्रति कुटिल व्यंग्य क्या है–
(अ) धीरज रखने का अनुरोध
(ब) भाग्य पलटने का आश्वासन
(स) कुछ और काम करने का आग्रह
(द) वेदना और धीरता

2. दिल्ली के देवता–कौन है–
(अ) सरकारी कर्मचारी
(ब) शक्तिशाली शासक
(स) बड़े व्यापारी
(द) प्रभावशाली लोग

3. कौन–सी पंक्ति परिवर्तन होने की चेतावनी दे रही है–
(अ) और धरो धीरज, किस्मत अब छपती है
(ब) पानी विलीन होता जाता है रेतों में
(स) तो होश करो, दिल्ली के देवो
(द) मिट्टी फिर कोई आग उगलने वाली है।

4. 'पानी विलीन होता जाता है रेतों में –कथन का आशय है
(अ) सिंचाई नहीं हो पाती
(ब) वर्षा पर्याप्त नहीं होती
(स) गरीबों तक सुविधाएँ नहीं पहुँचती
(द) रेत में खेती नहीं हो सकती।

5. निर्माण के पहरी अनदेखा करते है–
(अ) वैभवशाली लोगों को
(ब) दिल्ली के देवों को
(स) हरे–भरे खेतों को
(द) चोरों और भ्रष्टाचारियों को

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अथवा

यदि आप इस पद्यांश का चयन करते है तो कृपया उत्तर-पुस्तिका में लिखें कि आप प्रश्न संख्या 2 में दिए पद्यांश-II पर आधारित प्रश्नों में उत्तर लिख रहे है।

समय के सभी साथ जीवन बदलते है,
समय को बदलता हुआ तू चला चल।
कि भर आत्मविश्वास हर साँस में तू
उषा के लिए हास भर आस में तू
उड़ा दे सभी त्रास उच्छवास में तू
बदल दे नरक के सभी दृश्य पल में
बना दे अमृत विश्व का सब हलाहल।
निराशा-तिमिर में रूका नही तू
न तूफ़ान में भी झुका है कभी तू
जगत चित्र की तूलिका है सही तू
तुझे विश्व मदिरा पिलाए भला क्या
स्वयं विश्व को प्राण दे औ' जिया चल
निशा में तुझे चाँद ने पथ दिखाया
प्रलय-मेघ ने बिजलियों को बुलाया
थके प्राण को सिंह का स्वर पिलाया
धरा ने बिछा दिल नगों ने उठा सिर
बनाया तुझे, तू नया जग बना चला

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए-

1. कविता में किसे संबोधित किया गया है-
(अ) भारतीय युवा को (ब) मजदूर को
(स) आँधी-तूफ़ान को (द) संपूर्ण विश्व को

2. भारतीय वीरों को कैसे आगे बढ़ने को कहा गया है-
(अ) समय-असमय की चिंता न करते हुए (ब) समय के साथ चलते हुए
(स) समय पर काम करते हुए (द) समय को बदलते हुए

3. 'उड़ा सभी त्रास उच्छ्वासों में तूं-पंक्ति में आग्रह है-
(अ) कष्टों को भूल जाने का (ब) परेशानियों को गंभीरता से सहन करने का
(स) निडरता का (द) डराने का

4. प्राकृतिक शक्तियों ने भारतीय वीर का निर्माण किया है, इसलिए उसे
(अ) नए विश्व का निर्माण करना चाहिए (ब) आत्मविश्वास से भर जाना चाहिए
(स) प्रकृति का धन्यवाद करना चाहिए (द) विष को अमृत बना देना चाहिए।

5. काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा-
(अ) युवक (ब) नया जग बना चल (स) वीर सेनानी (द) आत्मविश्वासी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.3. निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए– **(1 × 4 = 4)**

1. मिश्र वाक्य का उदाहरण है –

(अ) बूढ़े व्यक्ति को दवा पिला दो (ब) मेरी बात मानोगे तो सुखी रहोगे

(स) तुम्ही ने कहा था कि वह झूठा है (द) बाज़ार जाओ और कुछ फल ले आओ

2. '<u>जैसा मैं कहूँ</u>, वैसा करते चलो।' वाक्य में रेखांकित उपवाक्य है –

(अ) संज्ञा उपवाक्य (ब) विशेषण उपवाक्य

(स) क्रियाविशेषण उपवाक्य (द) सर्वनाम उपवाक्य

3. 'पिता ने पुत्र को डाँटा और समझाया।' वाक्य है –

(अ) सरल वाक्य (ब) मिश्र वाक्य (स) आश्रित वाक्य (द) संयुक्त वाक्य

4. 'मूर्तिकार मूर्ति बनाने के साथ बढ़ाता भी है।' का संयुक्त वाक्य में रुपांतरण है –

(अ) मूर्तिकार मूर्ति बनाता है और पढ़ाता भी है

(ब) मूर्तिकार मूर्ति बनाता हुआ पढ़ाता भी है

(स) मूर्तिकार जब मूर्ति बनाता है, तब पढ़ाता भी है

(द) यद्यपि मूर्तिकार मूर्ति बनाता है, लेकिन पढ़ाता भी है।

5. 'माँ ने एक बहुत सुंदर गुड़िया बनाई है।' में विधेय है –

(अ) माँ ने (ब) बनाई है

(स) गुड़िया बनाई है (द) एक बहुत सुंदर गुड़िया बनाई है।

प्र.4. निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए– **(1 × 4 = 4)**

1. वाच्य के विषय मे कौन–सी बात सही नहीं है –

(अ) कर्तृवाच्य में अकर्मक–सकर्मक दोनों क्रियाओं का प्रयोग होता है

(ब) कर्मवाच्य में क्रिया सदैव सकर्मक होती है

(स) भाववाच्य की क्रिया अकर्मक, अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन होती है

(द) वाच्य सभी परिवर्तित नहीं होता।

2. 'बच्चा हँस रहा है।' का सही वाच्य–परिवर्तन है –

(अ) बच्चा हँसता है (ब) बच्चे से हँसा जा रहा है

(स) बच्चा हँसेगा (द) बच्चे को हँसना चाहिए।

3. 'रोगी चल नहीं सकता।' मे वाच्य है –

(अ) कर्मवाच्य (ब) भाववाच्य (स) कर्तृवाच्य (द) क्रियावाच्य

4. कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं होता –

(अ) जहाँ कर्ता अज्ञात होता है

(ब) जहाँ उद्देश्य कर्ता को प्रकट न करने का होता है

(स) जहाँ इच्छा, सहमति, अनुमति प्राप्त की जाती है

(द) जहाँ अशक्तता या असमर्थता बताई जाती है।

5. कर्मवाच्य में प्रधानता होती है –

(अ) कर्ता की (ब) कर्म की (स) क्रिया की (द) भाव की।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.5. निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए– **(1 × 4 = 4)**

1. मोहन प्रतिदिन घूमने जाता है। –रेखांकित पद का परिचय है –
(अ) स्थानवाचक क्रियाविशेषण, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ता कारक।
(ब) कालवाचक, क्रियाविशेषण, 'घूमने जाता है' क्रिया का विशेषण।
(स) परिमाणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, 'मोहन' विशेष्य।
(द) रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'घूमने जाता है' क्रिया का विशेषण।

2. काला घोड़ा तेज़ दौड़ता है। –रेखांकित पद का परिचय है–
(अ) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।
(ब) सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।
(स) गुणवाचक विशेषण, पुल्लिग, एकवचन, 'घोड़ा' विशेष्य।
(द) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्मकारक।

3. ताजमहल आगरा में है। –रेखांकित पद का परिचय है–
(अ) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्मकारक।
(ब) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, अधिकरण कारक।
(स) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।
(द) भाववाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।

4. 'कल हम मसूरी जाएँगे।' –रेखांकित पद का परिचय है –
(अ) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्मकारक।
(ब) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्म कारक।
(स) स्थानवाचक क्रियाविशेषण, 'जाएँगे' क्रिया कि विशेषता बताता है।
(द) जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक।

5. मैंने एक लड़ाकू विमान देखा। –रेखांकित पद का परिचय है–
(अ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।
(ब) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।
(स) निजवाचक सर्वनाम, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।
(द) पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता कारक।

प्र.6. निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए– **(1 × 4 = 4)**

1. रस की निष्पत्ति होती है–
(अ) विभाव और अनुभाव के संयोग से (ब) विभाव और संचारीभावों के संयोग से
(स) विभाव, अनुभाव और संचारीभाव के संयोग से (द) स्थायीभाव और अनुभाव के संयोग से।

2. रस का अंग नहीं है–
(अ) स्थायीभाव (ब) विभाव (स) अनुभाव (द) सद्‌भाव

3. 'रौद्र रस' का स्थायीभाव है –
(अ) भय (ब) घृणा (स) क्रोध (द) उत्साह।

4. 'निर्वेद' स्थायीभाव है –
(अ) करूण रस का (ब) हास्य रस का (स) अद्‌भूत रस का (द) शांत रस का।

5. 'हमारे हरि हारिल की लकरी।' सूरदास के इस पद में रस है –
(अ) करूण रस (ब) संयोग श्रृंगार रस (स) वियोग श्रृंगार रस (द) शांत रस।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.7 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- (1 × 5 = 5)

नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक-मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा। खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ नि:श्वास लिया। खीरे की एक फाँक उठाकर होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा। स्वाद के आनंद में पलकें मुँद गईं। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया। तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर, वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए। नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ-होंठ पोंछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से हमारी ओर देख लिया, मानो कह रहे हो - यह है खानदानी रइसों का तरीका।

1. नवाब साहब ने तृष्णा भरी आँखों से देखा -
(अ) लेखक को (ब) नमक-मिर्च से युक्त खीरे की फाँकों को
(स) रेल के डिब्बे को (द) पके हुए फलों को

2. खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ नि:श्वास लेना प्रतीक है -
(अ) नवाब साहब की थकान का (ब) उनकी आत्म-संतुष्टि का
(स) लेखक के प्रति उनके क्रोध का (द) लेखक की उपस्थिति में खीरा न खा सकने की विवशता का

3. खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर फेंकने से पहले नवाब ने कौन-सी क्रिया नहीं की-
(अ) फाँक उठाकर होठों तक ले गए (ब) फाँक को सूँघा
(स) फाँक को थोड़ा-सा चखा (द) मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से नीचे उतारा

4. नवाब साहब ने खीरे का रसास्वादन कैसे किया-
(अ) देखकर (ब) खाकर (स) सूँघकर (द) वासना से

5. नवाब साहब ने खीरे की फाँकों का बाहर क्यों फेंक दिया-
(अ) खीरा खाने योग्य नहीं था (ब) नवाब को खीरा खाने की इच्छा नही थी
(स) इससे वे लेखक को अपनी नवाबी दिखाना चाहते थे (द) इससे वे अपना मनोरंजन करना चाहते थे

प्र.8 निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए - (1 × 2 = 2)

1. हालदार साहब को कस्बे के नागरिकों का कौन-सा प्रयास सराहनीय लगा-
(अ) सड़क बनवाने का (ब) कस्बे में पार्क बनवाने का
(स) स्कूल बनवाने का (द) चौराहे पर नेता जी की मूर्ति लगवाने का।

2. बालगोबिन भगत हर वर्ष गंगा-तट जाते थे-
(अ) स्नान करने के लिए (ब) संत समागम और लोकदर्शन के लिए
(स) दान करने के लिए (द) मेला देखने के लिए

प्र.9 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए - (1 × 5 = 5)

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के से पाले,
विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले।
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो-
बादल, गरजो!

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

1. कवि बादल से प्रार्थना कर रहा है –

(अ) रिमझिम बरसने की (ब) घनघोर वर्षा की (स) जोरदार गर्जना करने की (द) छाया करने की

2. बादलों के हृदय में है –

(अ) प्रेम की भावना (ब) विद्युत-छवि (स) क्रोध की भावना (द) निराशा की भावना

3. बादलों को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है –

(अ) सौम्य रूप में (ब) भयानक रूप में (स) क्रांतिकारी रूप में (द) वीभत्स रूप में

4. कवि के बादलों को गर्जन करने के लिए क्यों कहा है –

(अ) वह लोगों को डराना चाहता है (ब) उसे बादलों का गर्जन अच्छा लगता है

(स) वह शोषित में जोश और क्रांति की भावना भरना चाहता है (द) सोए लोगो को जगाना चाहता है

5. बादलों की कौन-सी विशेषता नहीं है-

(अ) ललित-ललित (ब) काले घुँघराले (स) धूमिल (द) बाल कल्पना के से पाले

प्र.10 निम्नलिखित प्रश्नों में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए- (1 × 2 = 2)

1. योग के विषय में गोपियों का कौन-सा कथन सही नहीं है-

(अ) योग कड़वी ककड़ी के समान है (ब) योग ऐसी व्याधि है, जो उन्होने न तो देखी और न सुनी

(स) योग की आवश्यकता उन्हें है, जिनके मन चंचल है (द) योग रोग को दूर करने का उपाय है

2. लक्ष्मण के स्वभाव की विशेषता नहीं है –

(अ) क्रोधी और कटुभाषी (ब) शांत और मृदुभाषी (स) उग्र और निडर (द) बड़बोला

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

प्र.11 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए (2 × 4 = 8)

(अ) 'वह लँगड़ा क्या जाएगा फौज में पागल है पागल' कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

(ब) बालगोबिन भगत के व्यक्तित्व एवं वेशभूषा का चित्र अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

(स) 'बिना विचार, घटना और पात्रो के भी कहानी लिख जा सकती है' यशपाल जी के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत है?

(द) फदर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की। कैसे?

प्र.12 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए (2 × 3 = 6)

(अ) सुर के पद 'हरि है राजनीति पढ़ि आए' का मूल स्वर व्यंग्य है। स्पष्ट कीजिए।

(ब) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में परशुराम ने अपने विषम में जो कहा, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

(स) निराला जी ने अपनी कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

प्र.13 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए- (3 × 2 = 6)

(अ) 'माता का अँचल' पाठ में भोलानाथ अपने साथियों को देखक सिसकना क्यों भूल जाता है?

(ब) रानी एलिज़ाबेथ के दरज़ी की परेशानी का क्या कारण था? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएँगे?

(स) प्रकृति ने जल-संचय व्यवस्था किस प्रकार की है? साना-साना हाथो जोड़ि पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.14 दिए गए संकेत बिंदुओ के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए –

(अ) संगति के लाभ (1 × 5 = 5)

संकेत-बिन्दु – संगति का महत्व, संगति के प्रकार, सत्संगति से लाभ, कुसंगति का दुष्प्रभाव।

(ब) समय का सदुपयोग

संकेत – बिंदु – समय का महत्व, समय के सदुपयोग से लाभ, सफलता का आधार।

(स) संतोष का महत्व

सकेंत बिन्दु– संतोष का महत्व, असंतुष्टि के कारण, लोभ पाप का मूल है, संतोष ही सबसे बड़ा धन।

प्र.15 वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर छोटी बहन को 80-100 शब्दों में बधाई पत्र लिखिए।

अथवा

किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सुझाव देते हुए पत्र लिखिए।

प्र.16 'बोतलबंद पानी' का विज्ञापन 25 से 30 शब्दों में तैयार कीजिए। (1 × 5 = 5)

अथवा

'विश्व योग दिवस' का विज्ञापन 25 से 50 शब्दों में तैयार कीजिए।

प्र.17 'पोंगल' पर 30 से 40 शब्दों में शुभकामना संदेश-लेखन कीजिए।

अथवा

'स्वतंत्रता दिवस' पर 30 से 40 शब्दों में शुभकामना संदेश;लेखन कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तरमाला

खण्ड 'अ' - वस्तुपरक प्रश्न

1.	(1) (अ)	(2) (ब)	(3) (अ)	(4) (द)	(5) (स)
			अथवा		
	(1) (ब)	(2) (द)	(3) (स)	(4) (द)	(5) (द)
2.	(1) (अ)	(2) (ब)	(3) (द)	(4) (स)	(5) (द)
			अथवा		
	(1) (अ)	(2) (द)	(3) (ब)	(4) (अ)	(5) (ब)
3.	(1) (स)	(2) (स)	(3) (द)	(4) (अ)	(5) (द)
4.	(1) (द)	(2) (ब)	(3) (स)	(4) (स)	(5) (ब)
5.	(1) (ब)	(2) (स)	(3) (स)	(4) (ब)	(5) (द)
6.	(1) (स)	(2) (द)	(3) (स)	(4) (द)	(5) (स)
7.	(1) (ब)	(2) (द)	(3) (स)	(4) (द)	(5) (स)
8.	(1) (द)	(2) (ब)			
9.	(1) (स)	(2) (ब)	(3) (स)	(4) (स)	(5) (स)
10.	(1) (द)	(2) (ब)			

खण्ड 'ब' - वर्णनात्मक प्रश्न

11.

(अ) पानवाले की यह टिप्पणी बहुत अभद्र है। इससे हमारे मन में उसके प्रति क्रोध और घृणा की भावना उत्पन्न होती है। अपने इस कथन में उसने चश्मेवाले की देशभक्ति का मजाक उड़ाया है। इस प्रकार उसने देश और मानवीय मूल्यों का अपमान किया है। चश्मेवाला एक बूढ़ा और अपाहिज़ व्यक्ति है, ऐसे व्यक्ति का मज़ाक उड़ाना मानवता पर कलंक है।

(ब) बालगोबिन भगत एक सद्‌गृहस्त थे, परंतु उनका व्यक्तित्व भक्तों की तरह था। साठ वर्ष के भगत बेहद कम कपड़े पहनते थे। सरदियों में एक काला कंबल ओढ़ लेते थे। वे मँझले कद के गोरे-चिट्‌ठे आदमी थे। उनके सारे बाल सफेद हो गए थे, इससे उनका चेहरा जगमगाता-सा लगता था। उनके माथे पर रामानंदी चंदन सुशोभित होता था, जो नाक के किनारे से शुरू होता था। उनके गले में तुलसी की एक माला बँधी रहती थी। भगत सिर पर कबीरपंथियों की एक कनफटी टोपी भी धारण किए रहते थे और सदा ही खँजड़ी की लय, पर प्रभु भक्ति के गीत गाते रहते थे। भगत एक सच्चे साधु थे।

(स) हम लेखक के इस विचार से बिलकुल भी सहमत नहीं है कि बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी लिखी जा सकती है। विचार, घटना तथा पात्र किसी भी कहानी के लिए उसके प्राण तत्व होते है। लेखक ने यह बात व्यंग्य में कही है। वास्तव में वे यही बताना चाहते है कि बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी नहीं लिखी जा सकती। जो इनके बिना कहानी लिखने का दावा करते है वे लेखक उसी प्रकार ढोंगी है जैसे लखनवीं नवाब बिना खीरा खाए पेट भरने का ढोंग करते है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(द) संन्यासी की एक परम्परागत छवि है, जिसके अनुसार व्यक्ति त्यागी और विरक्त होकर सभी कार्य निष्काम भाव से करता है। फादर बुल्के संकल्प से संन्यासी थे। कभी कभी लगता था कि वे मन से संन्यासी नहीं थे। वे संन्यासी होते हुए भी रिश्ता बनाते थे ओर उसे तोड़ते नहीं थे। वर्षों बाद मिलने पर भी उस रिश्ते की जीवंतता अनुभव होती थी। भाषा जैसे विषय पर उनकी चिंता किसी परम्परागत संन्यासी की चिंता न थी। परम्परागत संन्यासी को सदैव अपने कल्याण (उद्धार, मोक्ष) की चिंता रहती है, जिसके लिए वह संसार को मोह-माया का जाल समझकर उससे विरक्ति को ही अपना साधन मानता है। संसार के सुख-दुख अथवा कल्याण (उद्धार) से उसका कोई सरोकार नहीं होता, जबकि फादर बुल्के ने संन्यासी की इस परम्परागत छवि के विपरीत संसार और उसके रिश्तें नातों में लिप्त रहकर सबका कल्याण करने में ही अपना उद्धार समझा। इससे स्पष्ट है कि फादर बुल्के की अपनी अलग ही विशिष्ट छवि थी।

उ.12

(अ) सूरदास जी के इस पद का प्रत्येक शब्द व्यंय से भरा है। हरि है राजनीति पढ़ि आए पक्ति में गोपियों द्वारा कृष्ण पर तीखा व्यंग्य किया गया है। समाचार सब पाए कहकर इस व्यंग्य को और अधिक तीखा कर दिया गया है। वे साथ ही उद्धव को भी आड़े हाथों लेती है कि तुम तो पहले से ही चतुर चालक थे, अब तो गुरु कुष्ण से राजनीति भी सीख ली है अत: तुम्हारी बाते छल कपट से भर गई है। जब गुरु पंथ पढ़ाए, 'बढ़ी बुद्धि जानी और ऊधौ भले लोग आगे कहकर वे कृष्ण पर सीधे वार करने से भी नहीं चुकती। इस प्रकार पूरा 'पद' व्यंग्य से भरपूर है। वक्रोकित अलंकार का सहारा लेकर गोपियों ने वाक्चातुर्य का अनोखा उदाहरण दिया है।

(ब) परशुराम जी ने अपने विषय में कहा-क्या तुम मुझे केवल मुनि ही समझते हो ? मै बालब्रह्मचारी और अत्यंत क्रोधी हूँ। मै संपूर्ण विश्व में क्षत्रियकुल के शत्रु के रुप में विख्यात हूँ। अपनी शक्ति के बल पर मैने पृथ्वी को अनेक बार राजाओं से रहित कर दिया है और उसे ब्राह्माणों को दे दिया है। सहस्रबाहु की भुजाओं को मेरे ही फरसे ने काटा था। मेरा फरसा बड़ा भयानक है। है राजकुमार। तू इस फरसे को देख। इसकी गर्जना से गर्भस्थ शिशु भी मर जाते है। इस प्रकार परशुराम जी ने सभा स्वयं को अत्यधिक निर्दयी, क्रोधी और बलशाली बताया।

(स) 'उत्साह' वीर रस का स्थायीभाव है, जो इस कविता ही हर पंक्ति में समाहित है। यह कविता एक आह्वान गीत है। कविता में बादल एक तरफ पीड़ित-प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाला है तो दूसरी तरफ वही बादल नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति-चेतना को संभव करने वाला है। आह्वान गीत उत्साह का प्रतीक होता है। बादल की गर्जना व क्रांति की चेतना लोगों में उत्साह का संचार करती है कवि कविता के माध्यम से क्रांति लाने के लिए लोगों में उत्साह का संचार करना चाहता है। इसीलिए उन्होने अपनी कविता का नाम उत्साह रखा है।

उ.13

(अ) जब भोलानाथ की मैया उसे बलपूर्वक नहलाती है और उसके सिर मे तेल लगाती है। तो वह बहुत रोता है। उसके पिता उसे गोद में लेकर घर से बाहर ले जाते हैं, वहाँ भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है। इसी प्रकार जब पाठशाला में गुरु जी द्वारा मार खाकर वह बहुत रोता है तो पिता जी उसे घर ले आते है। रास्ते में वह अपने साथियों को देखता है, जो चिड़ियों के झुंड से खेल रहे होते हैं उन्हें देखकर भोलानाथ रोना-सिसकना भूलकर उनके साथ खेलने लगता है। इसका कारण बच्चे की स्वाभाविक बालमनोवृत्ति है। बच्चे को अपने खेल-खिलौने और साथी बहुत प्रिय होते है। उनके बीच में वह अपना सारा दुख-दर्द भूल जाता है। यही कारण है कि अपने साथियों को देखकर भोलानाथ सिसकना भूल जाता है।

(ब) रानी के दरजी की परेशानी का कारण यह था कि रानी भारत, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे पर जा रही थीं। उसे इन देशों के मौसम और पहनावे के अनुरुप पोशाकें तैयार करनी थीं। रंग-चयन में विशेष सावधानी रखनी थी। रानी इस यात्रा पर अपने देश का प्रतिनिधित्व कर रही थीं, इसलिए पोशाकों का उनके व्यक्तित्व और मर्यादा के अनुकुल होना आवश्यक था: हमारे विचार से उसकी परेशानी उचित थी: क्योंकि रानियाँ बहुत तुनक मिजाज होती है। छोटी-सी गलती भी हो जाती तो उसे रानी का कोपभाजन बनना पड़ सकता था।

(स) प्रकृति ने जल-संचय की अदुभुत व्यवस्था की है। उसने जल को पर्वत-शिखरों पर संचित किया है। समुद्र से जो जल बादलों के रुप में उठता है, वह सरदियों में पर्वत-शिखरों पर बर्फ के रुप में जम जाता है। गरमियों में यही बर्फ पिघलकर झरनों और नदियों के रुप में बहता है। तथा मैदानों की सिंचाई करता और सभी प्राणियों की प्यास बुझाता हुआ पुन: समुद्र में जाकर मिल जाता है। यह जल-चक्र शाश्वत है। इस प्रकार प्रकृति ने जल-संचय की यह बहुत ही अनोखी व्यवस्था की है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

14.

(अ) संगति के लाभ - संकेत-बिन्दु - संगति का महत्व, संगति के प्रकार, सत्संगति से लाभ, कुसंगति का दुष्प्रभाव।

उ. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। इसलिए वह समाज के बिना नहीं रह सकता। समाज में रहने के कारण वह किसी-न-किसी की संगति में जरूर रहेगा। इसलिए मानव जीवन पर संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है। कोई व्यक्ति जन्म से अच्छा या बुरा नहीं होता है। वह संगति में रहकर ही अच्छा या बुरा बनता है। संगति दो प्रकार की होती है- इसमें पहली है सत्संगति अर्थात अच्छे लोगों की संगति तथा दूसरी है। कुसंगति अर्थात बुरे लोगों की संगति कुछ लोग अच्छी संगति के कारण अच्छाई की तरफ़ जाते हैं और कुछ बुरी संगति के कारण अवगुणों की तरफ़ जाते हैं। अच्छी संगति में रहने वाला व्यक्ति सदा सत्यवादी, ईमानदारी तथा विश्वास के योग्य होता है। सत्संगति वाला व्यक्ति चरित्रवान होता है। चरित्र की श्रेष्ठता ही उसे श्रेष्ठता प्रदान करती है। सत्संगति पाकर वह अपने जीवन को आदर्श बना लेता है तथा सुख शांति और संतोष से जीता हैं सत्संगति सज्जनों की संगति है, जो हर तरह से वदंनीय तथा गुणों का ख़ज़ाना होते है, जो अवगुणों को सद्गुणों में बदलते हैं वे समाज के उत्तम प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। बुरी संगति का प्रभाव किसी भी व्यक्ति पर बड़ी आसानी से पड़ जाता हे। कहा जाता है कि दो राहें होती हैं। एक रास्ता कठिन दूसरा सरल है। कठिन रास्ता सदैव सत्य की ओर और सरल रास्ता असत्य और बुराई की ओर जाता है। अत: बुराई व अवगुणों का प्रभाव बड़ी सरलता से पड़ जाता है। यदि आप कुसंगति वाले के साथ कुछ देर के लिए खड़े भी हो गए, तो जिन लोगों ने आपको उनके साथ खड़े देखा है तो उनकी नज़रों में आप भी कुसंगति वाले हो जाते हैं।

(ब) समय का सदुपयोग - संकेत - बिंदु - समय का महत्व, समय के सदुपयोग से लाभ, सफलता का आधार।

उ. समय बहुत अमूल्य होता है। सोने, चाँदी, हीरे आदि हर एक चीज़ का मूल्य लगाया जा सकता है लेकिन समय की कोई कीमत नही लगाई जा सकती। समय का प्रत्येक क्षण अमूल्य होता है। पैसे-रूपयों को हम बैंक या कहीं और जमा कर सकते हैं। लेकिन समय टिकाऊ नहीं होता और वह किसी की भी प्रतीक्षा नहीं करता है। वह इतना तीव्रगामी है कि उसे कोई वायुयान तक नहीं पकड़ सकता है। अगर कोई पकड़ सकता है, तो सिर्फ़ वह जो उसकी गतिविधि पर दृष्टि जमाए हुए उसके प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करता है। कबीरदास जी ने समय के संबंध में कहा है-

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परले होयगी, बहुरि करौगे कब।।

अर्थात हमें जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लेना चाहिए और कार्य आज करना है, उसे तुरंत करना चाहिए जिन्होंने जीवन के एक-एक पल का सदुपयोग किया है, वे ही सफलता के शिखर पर पहुँच सके हैं। समय का सुदपयोग ही सफलता का आधार है। जो व्यक्ति समय का दुरूपयोग करते है, वे हमेशा असफल होते हैं और उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। धन एक बार चले जाने से उसे फिर प्राप्त किया जा सकता है लेकिन बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता है। जो इस रहस्य को समझ लेता है, वह कभी असफल नहीं होता है। समय ही वह कसौटी है जिस पर मनुष्य के जीवन को परखने से उसकी सफलता और असफलता की परीक्षा होती है।

(स) संतोष का महत्व - सकेंत बिन्दु- संतोष का महत्व, असंतुष्टि के कारण, लोभ पाप का मूल है, संतोष ही सबसे बड़ा धन।

उ. मनुष्य का मन स्वभाव से बहुत ही चंचल होता है। मनुष्य के मन में अनेक प्रकार की लालसाएँ तथा इच्छाएँ उठती रहती है। जिसका कोई अंत नहीं होता है। उसकी एक इच्छा के समाप्त होते ही दूसरी इच्छा का जन्म हो जाता है। यह सिलसिला चलता ही रहता है। जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट होता है वह धनवान है और जिस व्यक्ति का मन संतुष्ट नहीं होता वह व्यक्ति बिलकुल निर्धन है, चाहे उसके पास सभी साधन क्यों न हों। कबीरदास का कथन है, ''संतोष रूपी धन के सामने अन्य सभी धन मिट्टी के समान है।'' जिस व्यक्ति के पास संतोष रूपी धन आ जाता है, उसे किसी और धन को प्राप्त करने की इच्छा नहीं रहती। आज के मानव में दूसरे लोगों को खुश देखकर ईर्ष्या की भावना पैदा होती है। ईर्ष्या की भावना के कारण ही मनुष्य के जीवन में असंतोष देखा जा सकता है। आज के समय में व्यक्ति धन कमाने के चक्कर में बुरे-से -बुरा काम करने में संकोच का अनुभव नहीं करता है, क्योंकि उसमें पैदा हुआ लालच उसे उसकी बुराई के बारे में सोचने ही नहीं देता। आज का मानव धन के लालच में पड़कर मानव की जगह दानव बन चुका है। हमारे समाज में होने वाले सभी अपराधों के पीछे धन पाने की लालसा ही है। हम लोगों का जीवन और अधिक पाने की लालसा में ही भटकता रहता है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति का अपनी इच्छाओं के ऊपर नियंत्रण होता है, वह व्यक्ति तो दुनिया का सारा सुख अपने काबू में कर लेता है। वह निर्धन होते हुए भी सुख का अनुभव करता है, लेकिन जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों तथा इच्छाओं को काबू में नही कर पाता, वह व्यक्ति जीवन भर अशांति का जीवन व्यतीत करता है। धन की जितनी अधिक इच्छा होगी, लोभ का उतना ही अधिक जन्म होगा। लोभ पाप का मूल होता है। जो लोग धन से ऊपर किसी भी चीज़ को नहीं मानते हैं, वे धन को प्राप्त करने की इच्छाओं पर काबू नहीं रख पाते। ऐसे लोग धनी होने पर भी सदा दुखी रहते हैं। इसलिए मन का संतोषी व्यक्ति धनी है। जबकि अंसतोषी व्यक्ति सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी निर्धन है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

15. वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आने पर छोटी बहन को बधाई पत्र -

उ. सी-77, कमलानगर,

अलीगढ़।

दिनांक : 22 नवंबर, 20××

प्रिय नताशा,

मधुर स्नेह।

मैं यहाँ सकुशल हूँ, आशा करता हूँ कि वहाँ भी सब सानंद होंगे। कल माँ का फोन आया था, जिससे पता चला कि तुम अंतविद्यद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आई हो। सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। इस शानदार सफलता पर मेरी और से तुम्हें बहुत बहुत बधाई। तुम वाक्‌कला में बचपन से ही बहुत पटु हो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम भविष्य में बहुत अच्छी वक्ता बनोगी।

शिक्षणेतर गतिविधियों के साथ साथ अपनी पढ़ाई का भी पूरा ध्यान रखना। मैं शीघ्र ही तुम्हारे लिए एक बहुत सुंदर उपहार लेकर आऊँगा। मेरी और से माता जी और पिता जी को चरणस्पर्श कहना। एक बार पुन: बधाई।

तुम्हारा बड़ा भाई

शुभम

अथवा

परीक्षा भवन

दिल्ली

दिनांक 20 अगस्त, 20xx

सेवा में

संपादक महोदय

दैनिक जागरण

दिल्ली

विषय सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के संदर्भ में।

महोदय

मै आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार और समाज का ध्यान बढ़ती हुई सड़क दुर्घटनाओं की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। आशा है कि आप इसे जनहित में अवश्य प्रकाशित करेंगे।

इन दिनों दिल्ली में सड़क दुर्घटनाएँ काफी बढ़ गई हैं। वाहन चालक यातायात के नियमों का खुला उल्लंघन करते हैं। उन्हें रोकने-टोकने वाला कोई नहीं है।

दुर्घटनाओं को रोकने के संबंध में मैं निम्नलिखित सुझाव देना चाहता हूँ-

(i) प्रात: 8 से 12 बजे तक तथा सायं 5 से 8 बजे तक सभी व्यस्त चौराहों पर यातायात पुलिस के सिपाही उपस्थित रहें और वे नियम का उल्लंघन करने वालों का चालान करें।

(ii) वाहन चलाते हुए मोबाइल से बात करने वालों का तुरंत चालान कर देना चाहिए।

(iii) दो बार से अधिक कोई भी नियम भंग करने वाले चालक का ड्राइविंग लाइलेंस जब्त कर लिया जाना चाहिए।

(iv) ऐसे वाहन चालक को पुरस्कृत किया जाना चाहिए, जो अपने वाहन को निर्धारित गति सीमा में चलाते हों तथा किसी प्रकार के नियम भंग न करते हों।

(v) जनता से ऐसे वाहन चालकों के वाहन नंबर नोट करके यातायात पुलिस को देने की अपील करनी चाहिए, जो सड़क पर वाहन चलाते समय नियमों का उल्लंघन करते हों।

धन्यवाद

भवदीय

क.ख.ग.

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

16. गंगोत्री बोतलबंद पानी का विज्ञापन –

अथवा

'विश्व योग दिवस का विज्ञापन'

17. **'पोंगल' पर शुभकामना-संदेश** –

प्रेषक : क. ख. ग.

दिनांक : 14 जनवरी, 20××

सूर्यदेव का मिला उपहार,

धरा बनी धन का भंडार।

गौ माता की जय जयकार,

आया पोंगल का त्यौहार।

पोंगल की हार्दिक शुभकामनाएँ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अथवा

'स्वतंत्रता दिवस' पर शुभकामना – संदेश –

प्रेषक : क. ख. ग.

दिनांक : 15 अगस्त, 20××

पराधीनता से बड़ा, नहीं है कोई पाप्

पराधीनता मानव रहे, यह एक अभिशाप।

स्वाधीनता से बड़ा, नहीं कोई वरदान्

प्राणों के बदले मिले, तो भी सस्ती जान।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in